काव्यामृत

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति,
जयनगर, बेंगलुरु

बहुभाषा संगम संस्थे,

हुबली(पंजीकृत)

संयुक्त रूप से आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय काव्य गोष्ठी

संपादक
डॉ. वि. रा. देवगिरी
डॉ. विद्यावती राजपूत

KANARA WELFARE TRUST
KARWAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce
KARWAR - 581 301

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2020
आवरण चित्र	:	लेखक के सौजन्य
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© संपादक

ISBN : 978-93-89194-25-8
मूल्य : 150 रुपये

काव्यामृत(कविता संग्रह)-सं. डॉ. वि. रा. देवगिरी, डॉ. विद्यावती राजपूत
Kavyaamrut (Poetry Collection) Edited by Dr. V. R. Devagiri, Dr. V. G. Rajput

अनुक्रम

संपादकीय	07
नतमस्तक हूँ	11
उत्तरदायित्व	12
गाँव	14
अजन्मी व्यथा	16
लापता हूँ	19
नए दौर ने जादू फेरा, बात पुरानी छू-मंतर!	20
सिक्का	22
या भुमीची ती रक शोभर खरी	23
दिल में यादें छोड़ गये।	25
ब्यूटी पार्लर में एक दिन	27
ऐसा क्यों?	29
सुनहरी जिंदगी	31
पावस	32
बापूजी का प्रकाश	33
महापर	35
सिर्फ तुम हार मानो मत	37

दिल में यादें छोड़ गये।

यह इनसान बड़ा अद्भत था।
सारे भारतीयों को अपना समझता था।
इसलिलिए आज धरा भी रो ली।
सोचकर मेरा प्यारा लाल आज खो दी।
भारत माँ की आंखों में मैंने नमी देखी
मेरा प्यारा अटल सी औलाद कभी न दे सकी,
इसे तो इनसान के रूप में जन्म दिया था
भारत रत्न मेरा अटल, इंसानियत से भी उपर उठ गया।
काल के कपाल पर ही एक कविता लिख दिया।
अजातशत्रु का संकल्प देकर चला गया।
जाते-जाते यह कह गया, मैं जाऊँगा नहीं यही रहूंगा,
भारत माँ की गोदी जीऊंगा।
रार न करो, वार न करो,
रमते रहना प्यार में।
मनुष्य हैं हम प्यार में,
पड़ोसी रहे सदा जहन में
अनु से लेकर बम जानते, समय-समय के साथ हैं।
सबसे पहले दुनिया वालों, आप सभी अपने ही हैं।

ऐसा मोर्चा छोड़ गये।

अटल, अटल ही कमाकर चल गये।

बस हमारे दिल में यादें छोड़ गये।

—श्रीमती संध्या रत्ना [illegible],

केनरा बैंक [illegible] ट्रस्ट, सिंडिकेट कॉलेज ऑफ कॉमर्स, [illegible],
[illegible]-[illegible], जिला उत्तर कन्नड़, राज्य-कर्नाटक
संपर्क : [illegible]